IJESRR
UGC Approved Journal No. 49022
p – ISSN : 2349-1817
e – ISSN : 2348-6457

JOURNAL
International Journal of Education and Science Research Review

Impact Factor : 2.816

lume 4 August 2017 Issue 4

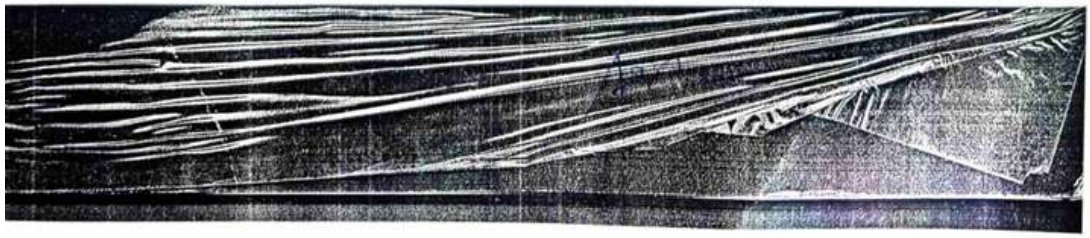

CONTENTS

IJESRR International Journal of Education and Science Research Review
Volume-4, Issue-4 August 2017 p-ISSN: 2349-1817, e-ISSN: 2348-6457

CONTENTS

1. INNOVATIONS IN ENVIRONMENTAL EDUCATION - A NEW DIMENSION
Dr. Seema Sharma, Dr.Madhvi Verma 1-5

2. सरदार वल्लभभाई पटेल का देश की एकता और अखण्डता में योगदान
श्रीमती आशा रानी 6-8

3. CONCEPTUAL FRAMEWORK OF RETAIL AND RETAILING IN INDIA: AN ASSESSMENT
Dr Ajay Kumar 9-16

4. WETLANDS, BIODIVERSITY, AND CLIMATE CHANGE
Dr. Pardeep Sharma, Deepa Sharma 17-24

5. SOME ANALYTICAL ASPECTS OF CHILD LABOUR IN INDIAN SOCIETY
Dr Virendra Singh Yadav 25-31

6. DYNAMICS OF INDIAN HOUSING FINANCE INDUSTRY AND FINANCIAL LITERACY: AN ASSESSMENT AFTER GLOBALISATION
Dr Anurag Gupta 32-40

7. MODEL AND METHOD OF IONIC EFFECTS ON THE STABILITY OF SUPERHELICAL DNA
Dr. Mohit Singh Sindhu 41-45

8. A FEW GENEREALISED FORM OF TOPOLOGICAL SPACES OF THE SETS OF GRAPHS
Himanshu Kumari, Dr. R.B. Singh 46-52

9. जनपद मेरठ के उच्च माध्यमिक स्तर के स्ववित्त पोषित एवं वित्त पोषित विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन
Dr. Anita Gupta 53-58

10. लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका
[illegible] 59-61

11. PRODUCTION INVENTORY MODEL WITH DETERIORATION AND PARTIAL SHORTAGES
Dr. Atul Kumar Goel 62-67

12. CHANGING PATTERN OF CHILD LABOUR IN INDIAN SOCIETY — A STUDY WITH SPECIAL REFRENCE TO MEERUT DISTRICT
Dr. [illegible] Sharma 68-80

13. [illegible] नरेश, मुगल व मराठा काल में
[illegible] अग्रवाल 81-85

14. मोहन राकेश कृत "आषाढ़ का एक दिन" में चरित्रों को पृष्ठभूमि का मूल्यांकन
Omprakash Suthar, Dr. Shakti Dan Charan 86-89

15. स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम एवं महिलाएँ
Savita 90-95

IJESRR International Journal of Education and Science Research Review
August- 2017, Volume-4, Issue-4
P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
Email- editor@ijesrr.org
www.ijesrr.org

सरदार वल्लभभाई पटेल का देश की एकता और अखण्डता में योगदान

श्रीमती आशा रानी, असिस्टेंट प्रोफेसर,

IJESRR International Journal of Education and Science Research Review
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
Email- editor@ijesrr.org

सरदार वल्लभभाई पटेल का देश की एकता और अखण्डता में योगदान

श्रीमती आशा रानी, असिसटेंट प्रोफेसर,
आर.के.एस.डी.कॉलेज, कैथल।
इतिहास संकलन समिति
विद्युत परिषद् प्रमुख, कैथल

1. क्रान्तिधर्मी तथा भारत के वीर सपूत सरदार वल्लभ भाई पटेल से कौन परिचित नहीं है। अपने अल्पकाल के जीवन में ही उन्होंने भारत की गौरव–पताका विश्व में फहरा दी। उनका अपना व्यक्तिगत जीवन स्वयं इतिहास की एक धरोहर है कि उसका अनुकरण कर हर मनुष्य अपना जीवन धन्य कर सकता है।

31 अक्टूबर, 1875 को बोरसद तालुके के करमसद नामक गांव में एक किसान के घर में जन्मे सरदार वल्लभ भाई पटेल वास्तव में एक लौहपुरुष और भारत को एकता के सूत्र में बाँधने वाले महान् देशभक्त एवं क्रान्तिधर्मी थे। सरदार पटेल स्पष्टवादी, संयमी, वीर एवं दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे। सरदार पटेल में बिस्मार्क– जैसे संगठन–शक्ति एवं चाणक्य–जैसी राजनीतिक पटुता थी। यह समस्याओं को व्यावहारिक दृष्टि से निबटाते थे। भारत की आजादी के बाद भी अंग्रेजों ने भारत में फूट डालने की कोशिश की, लेकिन यह सरदार पटेल ही थे, जिन्होंने देश को एकता के सूत्र में बांधे रखा। अंग्रेज छोटी–छोटी रियासतों को यह अधिकार दे गये कि वे अपनी इच्छानुसार भारत या पाकिस्तान में मिलने को स्वतन्त्र हैं, साथ ही यदि वे चाहें, तो अपने अस्तित्व को भी स्वतन्त्र रख सकती हैं।

ऐसी स्थिति में जब राष्ट्रीय नेताओं को कुछ भी नहीं सूझ रहा था, उस समय लौहपुरुष सरदार पटेल ने रियासतों को भारतीय गणराज्य में मिलाने का महत्वपूर्ण काम किया, जो एक मिसाल बन गया।

आज सरदार पटेल हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु महामानव कभी नहीं मरते, वे अपने कर्मों से सदैव लोगों के दिलों में जीवित रहते हैं। बारडोली के सरदार, गुजरात केसरी, स्वाधीनता आन्दोलन के नेता, किसान नेता, भारतीय एकता के रक्षक एवं लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल पर भारत माता को सदैव गर्व रहेगा।

(सरदार वल्लभभाई पटेल 'परिचय')

2. 15 अगस्त, 1947 को हमारा भारत गुलामी की जंजीरों से मुक्त हो गया था, अर्थात् स्वाधीन हो गया था, परन्तु हमारे भारत को इस स्वाधीनता की बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी थी। उस समय एक ओर तो देश विभाजन और हिन्दू–मुस्लिम वैमनस्य की आग में झुलस रहा था और दूसरी ओर छोटी–छोटी रियासतों के राजा अपने स्वतन्त्र अस्तित्व को बनाये रखने के लिए देश के नेताओं की एक बात सुनने को तैयार न थे। इसका कारण था कि अंग्रेज जाते–जाते भी देश में एक चिंगारी छोड़ गये थे, अर्थात् अंग्रेज इन रियासतों को यह अधिकार दे गये थे कि वे अपनी इच्छानुसार भारत या पाकिस्तान मिलने को स्वतन्त्र हैं। साथ ही यदि वे चाहें, तो अपने अस्तित्व को भी स्वतन्त्र रख सकती हैं।

ऐसी स्थिति में जब राष्ट्रीय नेताओं को कुछ भी नहीं सूझ रहा था, उस समय लौहपुरुष सरदार पटेल ने रियासतों को भारतीय गणराज्य में मिलाने का महत्वपूर्ण काम किया, जो एक किसाल बन गया। ऐसे लौहपुरुष सरदार पटेल को अदम्य साहस और दूरदर्शिता की प्रतिमूर्ति तथा आधुनिक भारतीय राष्ट्र के निर्माता कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

3. सन् 1946 में, 17 अगस्त को पण्डित जवाहरलाल नेहरू वायसराय से मिले। अन्तरिम सरकार ने 24 अगस्त को पण्डित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में शपथ ग्रहण की। उस दिन वायसराय ने मुस्लिम लीग को अन्तरिम सरकार में हिस्सा लेने का आमन्त्रण दिया। जब मुस्लिम नेता श्री जिन्ना ने यह देखा कि अन्तरिम सरकार में मुस्लिम लीग के शामिल न होने से कांग्रेस का एकाधिकार बढ़ जायेगा, तो उन्होंने अक्टूबर महीने में अन्तरिम सरकार में हिस्सा लेने का निश्चय किया।

अन्तरिम सरकार में शामिल होने के पश्चात् भी मुस्लिम लीग यदाकदा सरकार के कामों में अवरुद्ध उत्पन्न करती रही। पहले तो उसने इस बात के लिए दबाव डाला कि गृह विभाग मुस्लिम लीग को सौंपा जाये। लेकिन सरदार पटेल ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए यह धमकी दी कि यदि ऐसा किया गया, तो कांग्रेस सरकार से त्याग–पत्र दे देगी। इस गतिरोध को समाप्त करने के लिए वित्त विभाग मुस्लिम लीग को दे दिया गया।

4. 1947 के शुरुआती दिनों में प्रधानमन्त्री क्लेमेंट एटली ने घोषणा कर दी कि अंग्रेज जून 1948 तक भारत छोड़ देंगे। इस काम को पूरा करने के लिए नये वाइसराय लार्ड माउण्टबेटन को भारत भेजा गया।

इस समय सरदार पटेल का हृदय बहुत भरा हुआ था। देश के लोगों को समझाते हुए उन्होंने भरे गले से कहा– "मैं जीवन–भर भारत की एकता के लिए प्रयत्नशील रहा हूँ। आप सबको इस प्रस्ताव से जो दुःख हुआ है, उससे कम मुझे नहीं हुआ है, परन्तु विश्वास कीजिए कि इसके अलावा कोई अन्य चारा नहीं रहा था। इसीलिए मैंने आगे बढ़कर कहा– ब्रिटिश सल्तनत हिन्दुस्तान का विनाश करने पर उतारू है, यदि यह सब उसी तरह चलता रहा, जैसा कि चल रहा है, तो मुझे निश्चित भय है कि समूचा भारत पाकिस्तान बन जायेगा। इसलिए यदि सारे भारत को पाकिस्तान बनने से बचाना हो, तो इस प्रस्ताव को स्वीकार करके, विभाजन का खतरा उठाकर भी अंग्रेज सरकार को भारत से हटाने में ही हमारी बुद्धिमानी होगी। इसी में देश का सुख निहित है। भविष्य की बहुत बड़ी बुराइयों को रोकने के लिए इस बुराई को स्वीकार करके अंग्रेजों को इस पाप को भारत से हमें विदा करना चाहिए। इस दृष्टि से मैं दुःख और वेदना से रुदन करने वाले अपने मित्रों से अनुरोध करता हूं कि वे इस कड़वे घूंट को पी जायें।"

5. सन् 1947 की 15 अगस्त को भारत और पाकिस्तान दोनों देशों को दो उपनिवेशों का स्तर प्रदान किया गया। देशी रियासतों को स्वतन्त्रता दी गयी कि वह भारत या पाकिस्तान में शामिल हो जायें और अपने को स्वतन्त्र राज्य समझें।

Copyright@ijesrr.org

IJESRR International Journal of Education and Science Research Review
Volume-4, Issue-3 June 2017 p-ISSN: 2349-1817, e-ISSN: 2348-6457

CONTENTS